फरीदाबाद

मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 77

नवम्बर 1994

इस अंक में

- एस्कोर्ट्स
- नया जाल
- गुडईयर
- बत्रा एसोसिएट्स
- जेलों में हत्याएं

क्या नहीं करें? क्या करें?

अक्टूबर माह में पुलिस ने फरीदाबाद में एक अभियान चलाया जिसमें कई दिन सुबह पाँच-छह बजे बस्तियों और आने-जाने की राहों को घेर कर 250-300 लोगों को जगह-जगह से पकड़ कर विभिन्न थानों व पुलिस चौकियों में ले गई। टट्टी-पेशाब करने जाते, ड्यूटी जाते, सोये हुओं को तथा रोटी बनाते हुये लोगों को पुलिस हाँक कर ले गई। "क्या बात है?" पूछने का जवाब गाली और डन्डे था।

प्रेम नगर, आदर्श नगर, जवाहर कालोनी, इन्दिरा नगर, संजय कालोनी, संजय मेमोरियल नगर, सारण जनता कालोनी, बाटा झुग्गियों, 3 सैक्टर झुग्गियों, आस्था कालोनी, अज्ञी कालोनी, सुभाष कालोनी के लोग इस पुलिस अभियान की चपेट में आये।

6 अक्टूबर को सुबह साढे सात बजे मुजेसर थाने के गेट के बाहर एक आदमी को कच्छे- बनियान में लेटा कर एक पुलिसवाला चमड़े की पट्टी से मार रहा था। वह आदमी चीख रहा था। हजारों मजदूर वहाँ से गुजरे, चुपचाप।

शिफ्ट के बाद रात बारह-साढे बारह छूटने वाले वरकरों को और शाम को सात-आठ बजे युवक-युवती युगल को गाली देना, डन्डे मारना, पैसे वसूलना पुलिस का रोज का काम है।

जिन्हें आम हालात कहते हैं, सामान्य परिस्थितियाँ कहते हैं उनमें पुलिस का उपरोक्त व्यवहार है।

ऐसे व्यवहार के प्रति आम चुप्पी क्यों है?

बर्बरता के ऐसे स्तरों को बरदाश्त करने, अनदेखा करने और जायज तक ठहराने की अपनी प्रवृतियों की मजदूरों द्वारा बारीकी से परख को आम चुप्पी ने जरूरी बना दिया है।

प्रवृति नम्बर 1 : "मेरे तो नहीं मार रहे, मुझे तो नहीं पकड़ा।" जब भी कोई "मैं" पिट रहा होता है तब उसके पास से गुजरते अनेक पैर और देखती जाती अनेकों आँखें इस लाइन का जाप करते हुये अपने दिलों की बढती धड़कन को सामान्य करती हैं। व्यक्ति आस्तिक हो चाहे नास्तिक, समाज में व्याप्त आतंक ने उपरोक्त मन्त्र को उसका ओम इन्शा अल्लाह बना दिया है।

प्रवृति 2 : "बोलूँगा तो मुझे भी पीटेंगे, कौन झँझट में पड़े।" सही बात है, कई मौकों पर अकेले का बोलना समझदारी नहीं होती। पर हर ऐसा उच्चारण हमें जकड़े घातक जाल में एक और तार पिरो देता है। यह भी देखा गया है कि आतंक के विरोध में जब दस-बीस लोग इक्ट्ठे बोलते हैं तब उनकी बात अर्थहीन नहीं रहती।

आतंक के प्रतिरोध और अपने डर पर काबू पाने की राह पर बढ़ने के लिये सामुहिक कदम मत उठाइये। हजार-दो हजार-पाँच हजार पर्चे छाप कर लोगों में मत बाँटिये क्योंकि इससे जो पिटे हैं उनका अकेलापन टूट जायेगा और आम लोग हरकत में आ सकते हैं जिससे आतंक फैलाने वालों को परेशानी होगी।

अपने पड़ोस, मोहल्ले, बस्ती और कार्यस्थल पर मीटिंगें करके अपने साथ हुये दुर्व्यवहार की जानकारी लोगों को मत दीजिये क्योंकि तब लोग विचार-विमर्श में हिस्सेदार बनके सामुहिक कदम उठा सकते हैं जिससे आतंक फैलाने वालों को परेशानी होगी।

प्रवृति नम्बर 3 : "जरूर कुछ किया होगा। ठीक ही कर रही है पुलिस। लोग हैं ही इस लायक।" कालीदास बैठा डाल पर काटे अपनी जड़। भ्रमजाल से आँख खुली तब रची शकुन्तला सुन्दर।

प्रवृति नम्बर 4 : "कुछ करने से भी क्या होगा। कुछ नहीं हो सकता।" एक दृष्टिकोण से यह बहुत ही सूझ-बूझ वाला निष्कर्ष है। बार-बार के अनुभवों का यह निचोड़ कि नेता, अफसर, मन्त्री, पार्टी, झन्डे के पीछे दौड़ने से कुछ नहीं होगा, उच्च स्तर की चेतना दर्शाता है। लेकिन इस मकड़जाल से निकलने के लिये आवश्यक रचनात्मक क्रियाओं में आड़े आ कर यह समझदारी यथास्थिति को स्थायित्व भी प्रदान करती है।

जब हम अपने-अपने तौर पर सोचते हैं तब यह प्रवृतियाँ बहुत स्वाभाविक हैं क्योंकि यह अपने आप को बचाये रखने तथा कम से कम चोट खाने की बुनियाद पर टिकी हैं। व्यक्ति की आज के समाज में अत्यन्त कमजोर स्थिति का यह प्रवृतियाँ तर्कसंगत प्रतिबिम्ब हैं। लेकिन ऐसी तार्किकता हमारी रोजी-रोटी और मान-सम्मान पर हमलों के वक्त हमें प्रतिरोध नहीं करने की सीख देती है। ऐसी तार्किकता में लाखों लोगों के कत्ल पर आँख मूँदने और उसे जायज ठहराने की क्षमता है।

सिले होंठ

पुरूष। श्वेत वर्ण। यूरोपीय। अमरीका, यूरोप और जापान में केन्द्रित एक औद्योगिक ग्रुप की एक कम्पनी में कार्यरत। एरिया सेल्स मैनेजर की पदवी। बेहतर वेतन पाने वाले मजदूरों में गिनती। "हमारी कम्पनी" और "हमारी कम्पनी" के उत्पादनों की बेइन्तहा वाहवाही करने में डिग्री। काम में देश-विदेश की उड़ानों का सिलसिला। फाइव स्टार होटलों में रिहाइश। लाखों-करोड़ों अन्य लोगों का हसीन सपना। या यूँ कहिये कि वर्तमान किराये पर काम करने की व्यवस्था का चलना-फिरना विज्ञापन। पर सिर्फ विज्ञापन ही।

काम की रूटीन पर गौर करने पर अन्य सभी विज्ञापनों की भाँति यहाँ भी सर्वव्यापी खुशी और खूबसूरती का वातावरण फीका पड़ता दीखता है। एक दौरे का विवरण : हफ्ते-भर में फ्रांस से दिल्ली, दिल्ली से बंगलूर, बंगलूर से मलेशिया, वहाँ से हाँग काँग और कोरिया और वापस फ्रांस। लगभग हर महीने ऐसा एक थकान-भरा दौरा। अक्सर लगातार चार-पाँच दिन पैर पसार कर सोने का मौका नहीं। सेल्स टारगेट के पीछे दौड़ की चिन्तायें अलग से। टारगेट पूरे न होने पर वेतन कटौती और नौकरी से हाथ धोने का डर। फिर भी चेहरे पर कोई शिकन तक पड़ने देने की इजाजत नहीं। काम के अतिरिक्त किसी से मिलने की, बात करने की गुंजाइश न के बराबर। दिल्ली के छह-सात चक्कर के बावजूद भी होटल और आफिस के अलावा कुछ देखने का, किसी से मिलने का मौका ही नहीं।

एक मीटिंग में किसी अन्य ऐसे ही महाशय के देरी से पहुँचने के कारण पाँच-दस मिनट साँस लेने का समय मिला। बातचीत सीधी काम के बोझ और काम की सार्थकता पर पहुँची। अपने ही काम और जीवन को समझाने-दर्शाने के लिये एक कार्टून का सहारा ले कर कहा, "पाँच साल पहले काम करना बड़े उत्साह, लगन और उम्मीद से शुरु किया था पर [illegible] है कि और चार-पाँच साल में बन्दर बन जाऊँगा।"

जो चाहते हैं कि यह अखबार ज्यादा लोग पढ़ें, ऐसे 150 मजदूर अगर हर महीने दस-दस रुपये दें तो इस अखबार की पाँच हजार की जगह दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद -121001 (यह जगह बाटा चौक के पास है)

मजदूरों द्वारा अपने अनुभवों और विचारों को प्रस्तुत करने के लिये लिखे लेखों और रिपोर्टों को हम इस पन्ने पर छापेंगे। ऐसे लेख और रिपोर्ट हमारे लिये खुशी की चीज हैं। अपनी बात हमें लिख कर दें। आपको अपनी बातें छपवाने के लिये कोई पैसे खर्च नहीं करने पड़ेंगे।

माना दाई

मेरा नाम माना है परन्तु गांव में सभी मुझे मानड़ी कहते हैं। चौकीदार की किताब में जब हर उत्पन्न होने वाले बच्चे का ब्योरा लिखा जाता है तो दाई के स्थान पर 'मानड़ी' लिखा जाता है।

सात-आठ हजार की आबादी वाले गाँव में मुझे आठ सौ से ऊपर घरों में हर जच्चा के बच्चा होने पर बुलाया जाता है। जब लड़का होता है तो मुझे चौखा इनाम – पाँच रुपये, थोड़े-बहुत दाणे और जच्चा से महीने वाले दिन एक तील मिल जाती है, लेकिन लड़की होने पर तिथ्थ भी नहीं पूछी जाती।

यदि माँ-बाप की अज्ञानता व लापरवाही के कारण गर्भ में बच्चा मर गया या जन्म के बाद मर गया या बच्चे की माँ को हानि-परेशानी हो गई तो मानड़ी को बराबर मातम मनाना पड़ता है।

वर्कलोड और कार्य की जोखम को देखते हुये मुझे किसी बड़ी कोठी वाले डाक्टर के समान सम्पन्न होना था। यहाँ तो एक कच्चा कोठा है। उम्र सत्तर को पार कर चुकी है। पति अरसे पहले विदा हो चुका है। एक लड़का था वह भी दस-पन्द्रह वर्ष पहले कत्ल हो चुका है। आज गांव में जो जन्म से पचास वर्ष तक का है उसे मैंने जन्माया है परन्तु मेरे बेटे के कातिलों को सरेआम बरी कर दिया गया।

एक लड़की थी वो कानपुर में रहती है। वहीं मकान बना लिया है। पति रेलवे में कर्मचारी है और तीन बेटे व एक बेटी उच्च पदों पर आसीन हैं। पति के भाई भी निकट के गाँव में सम्पन्नता से रहते हैं, एक सूबेदार व एक थानेदार है।

यहाँ तो एक ज्यान है और वह भी बेगार में मर रही है। पानी में आदमी जब अधिक गहरे चला जाता है तो फिर पानी की तरफ खिंचा चला जाता है और डूब कर मर जाता है। ठीक यही हालत अब मेरी है। अवस्था ढल चुकी है पर फिर भी जिस समाज में रहती हूँ उसकी सेवा करना अपना फर्ज समझ कर बचा नहीं जा सकता।

– माना दाई ने लिखवाया

ऐसा क्यों?

मैं उदय चन्द S/o श्री चन्दन सिंह, गाँव व पोस्ट चान्दपुर, तहसील बल्लबगढ़, जिला फरीदाबाद का रहने वाला हूँ और मजदूर लाइब्रेरी के नजदीक आटोपिन्स कारखाने का बर्खास्त किया हुआ मजदूर हूँ।

I. यह कि आटोपिन्स कारखाने में मैंने 1.8.78 से मार्च 1986 तक बतौर हैल्पर के पद पर कार्य किया।

II. यह कि मार्च 86 में मुझे झूठे आरोपों में फँसा कर, मार-पिटाई का इल्जाम लगा कर तथा पुलिस द्वारा फँसा कर मुझे दिसम्बर 86 में बरखास्त कर दिया।

III. यह कि कारखाने की भ्रष्ट मैनेजमेंट के खिलाफ मैंने मार्च 1987 में लेबर कोर्ट फरीदाबाद में अपना केस दर्ज कराया।

IV. यह कि हरियाणा सरकार, राज्यपाल द्वारा मुझे विश्वास दिलाया गया कि अदालत तुम्हें इस केस का फैसला लगभग तीन माह (Three Months) में देगी।

V. यह कि सरकार का विश्वास मान कर बहुत इन्तजार किया तथा अक्टूबर 94 तक भ्रमित रहा हूँ।

VI. यह कि न्यायालय पर कब तक विश्वास किया जाये? अर्थात् मैं एक मजदूर यह विश्वास क्यों नहीं करूँ कि सरकार अविश्वसनीय है, इसका कोई धर्म ईमान नहीं है।

VII. यह कि आटोपिन्स कारखाने ने तो बर्खास्त कर दिया, संतुष्टी हो गई। लेकिन सरकार ने अर्थात् न्यायालय ने कानून का दर्जा दे कर मेरी बेरोजगारी की अवधि और लम्बी कर दी तथा लम्बी बेरोजगारी की कोई सीमा नहीं है अदालत के पास और ना ही किसी मजदूर की फाइल उठाने का समय है जज साहबों के पास।

VIII. यह कि मैं पूछता हूँ सरकार से कि श्रम सम्बन्धित मामले को लम्बा करने अर्थात् मजदूर की बेरोजगारी का समय लम्बा क्यों करती है?

IX. यह कि अदालत को तीन माह का वायदा बरकरार रख कर मजदूर की तरफ तथा उसके बच्चों की तरफ ध्यान अवश्य रखना चाहिये।

मेरा केस मार्च 1987 से अब अक्टूबर 1994 तक एक ही हालत में है। ऐसा क्यों?

26.10.94 – उदय चन्द

अध्यापक को शिक्षा

मैं हरियाणा राज्य के एक राजकीय उच्च विद्यालय का अध्यापक 'मजदूर' हूँ। अठावनवाँ वर्ष चल रहा है और मृत्यु निकट लगती है। दिलो-दिमाग ने जवाब दे दिया है फिर भी अठारह किलोमीटर साइकिल पर चल कर स्कूल अटैन्ड करता हूँ। सोचता हूँ यदि रिटायर होने से पहले मर जाऊँ तो अच्छा है, कम से कम पत्नी को पेन्शन और लड़के को नौकरी मिल जाये।

जब मैं अध्यापक लगा तब अठारह वर्ष का छबीला जवान था। हाकी व कबड्डी का नामी खिलाड़ी था। पिताजी भारतीय फौज के कप्तान थे, कैप्टन बी एस पंघाल। वे मुझे भी मैट्रिक के पश्चात फौजी जवान बना कर एक मिलिट्री अफसर का ख्वाब ले कर मर गये।

मैंने देश की रक्षा करने की बजाय देश का सुधार करना अच्छा समझा था। इसी अरमान को ले कर बना अध्यापक।

अठारह वर्ष से अठावन वर्ष, पूरे चालीस साल देश के बच्चों का सुधार करते गुजर गये परन्तु 40 साल पुरानी साइकिल, घड़ी व पिताजी की बनवाई बैठक के अतिरिक्त मैं कुछ न खरीद सका। आज मुझे डेढ सौ रुपये रोजाना मिलते हैं जबकि कोई भी पल्लेदार-लुहार-कुम्हार-चमार-हाली व पाली भी बड़े आराम से निजी काम करके इतने रुपये कमा लेता है।

सेना में सिपाही भी, चाहे निरक्षर हो, पन्द्रह वर्ष की सेवा तक सूबेदार अवश्य बन जाता है परन्तु यहाँ तो 40 वर्ष में एक भी फीत (रैंक) नहीं लगा। वही मास्टर का मास्टर।

यह कहानी राज्य के 80 हजार से भी अधिक अध्यापकों की है।

एक-एक अध्यापक को तीन-तीन व कभी-कभी 10-10 पोस्टों पर कार्य करना पड़ता है। मर्दन-सुमारी (जनगणना), वार्ड बंदी व निर्वाचन के कार्य बेगार के रूप में करने पड़ते हैं। यदि कोई प्राकृतिक विपदा आ जाये व जनसंख्या बढ़ जाये तो उसको घटाने का कार्य भी अध्यापक को ही करना पड़ता है।

"ड्यूटी जो भी मिले तो साइन, नहीं तो रिजाइन।"

– होशियार सिंह

गाम का चौकीदार

म्हारे गाम के किसे समजदार छौरे न न्यू बताया के भाई गरीबाँ की छापणिया बी एक अखबार सै। न्यू घणी बात तो मैं गून्ठा टेक के समजूँ पण मजदूराँ की एक किताब मँह हमनैं रामायण आर माहभारत तैं घणा सुआद आया। उसकी एक रागनी हामनै घणी मजेदार लागी, "जिन्दगी दुःखी कमाऊ की।"

के बताऊँ बस, रहण दे, "गरीब की बहु सब की भाब्बी"।

मैं सूँ गाम का चौकीदार आर पन्दरा साल होगे गोड्डे रगड़दें। मेरा छोट्टा भाई किरपा बी चौकीदार सै। किसै का काटड़ा-बाछड़ा खू ज्या तो करो मुनादी आर किसै न तम्बाखु आर गठिये बेचणे सैं तो करो मुनादी। सरपंच, पटवारी, थाणेदार की हम बहु साँ। किसै की राण्ड पड़ज्या कुवै मँह तो मर म्हारी सै। आपनै मजदूराँ की बड़ी खराब-माटी देखी सै पण गाम के चौकीदार आर मानड़ी दाई तैं घणी बुरी हालत किसै और मजदूर की कोनी देखी होगी। अगर थाम म्हारी बात छाप द्योगा तो फेर मैं पूरी कहाणी बता द्यूँगा। इब हाम बी जाग गे साँ, दो-दो हाथ दिखावाँगे।

19.10.94 – जैराम चौकीदार

बीमार पानी

सैक्टर 7 A हाउसिंग बोर्ड कालोनी के नलों में मिट्टी और सीवर का पानी मिल कर आ रहा है। गन्दगी के साथ-साथ पानी में कीड़े भी आते हैं। हमने सैम्पल भी चैक करवाने को दे दिया है। शिकायत करने पर एस डी ओ ने जवाब दिया कि पानी में मिट्टी आने से क्या होता है।

सीवर लाइन चौक होने के कारण लोग बीमार हो रहे हैं। सड़क पर गन्दा कूड़ा-करकट पड़ा रहता है। हम लोग कई बार कम्पलैक्स को कम्पलेन्ट कर चुके हैं पर वह कोई सुनाई नहीं करते। 25.10.94 – राजबीर

एक मीटिंग

पुरोगामी महिला संगठन की ओर से 22.10.94 को गाँधी पीस फाउन्डेशन हाल, दिल्ली में मीटिंग हुई। 40 के लगभग स्त्री-पुरूष उपस्थित थे। मैं फरीदाबाद से गई थी। तीन महिलाओं द्वारा रखे यह विचार मुझे महत्वपूर्ण लगे – 1. ओखला स्थित कपड़े सीलने वाली फैक्ट्रियों में मजदूरी मात्र 600 रुपये मिलती है। शिकायत करो तो फैक्ट्री मालिक पर मात्र 500 रुपये जुर्माना होता है जो उनके लिये मामुली रकम है। 2. कोर्ट में कहा जाता है कि जो भी कहो सत्य कहो लेकिन वकील सच बोलते हैं क्या? मैंने पुलिस द्वारा गिरफ्तारियों के सम्बन्ध में बातें रखी। लोगों को फरीदाबाद में पुलिस आतंक के सम्बन्ध में जानकारी नहीं थी।

मैं कई महिलाओं से मिली। मैं पहली बार मीटिंग में बोली, थोड़ी हिचक लग रही थी। मुझे मीटिंग अच्छी लगी। – – वीणा

मैनेजमेन्टों का नया जाल

"प्रत्येक मजदूर को हर रोज बर्खास्तगी की आशंका के साथ काम आरम्भ करना चाहिये।" – नई स्टाइल मैनेजमेंट का मन्त्र। कैजुअल और ठेकेदारों के मजदूर तो रोज इस तरह काम आरम्भ करते ही हैं, पर प्यारे परमानेन्ट मजदूर साथियो, इस मन्त्र पर अब आपके फिदा होने की विद्वान उम्मीदें कर रहे हैं।

न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया में मैनेजमेन्टों ने कुछ नये तरीके अपनाये हैं। देश के आधार पर वेतन समझौते करने बन्द कर उन्होंने उत्पादन की शाखा के आधार पर करने शुरु किये। फिर उत्पादन शाखा के आधार पर एग्रीमेन्टें बन्द कर फैक्ट्री आधार पर करनी शुरु की। तत्पश्चात न्यूजीलैंड में मैनेजमेंटों ने फैक्ट्री आधार पर एग्रीमेन्टों को तिलांजली दे कर प्रत्येक मजदूर से अलग-अलग डील करना शुरु किया। मजदूर तीखा विरोध कर रहे हैं तथा आस्ट्रेलिया में तो मजदूरों के प्रतिरोध ने मैनेजमेंटों को इस राह पर और आगे नहीं बढ़ने दिया है।

इधर बंगलूर स्थित विपरो फ्ल्युइड पावर और तुमकुर स्थित टाइटन घड़ी फैक्ट्रियों की मैनेजमेंटों ने न्यूजीलैंड मैनेजमेंटों की राह पर कदम बढा दिये हैं। उन्होंने प्रत्येक मजदूर से अलग-अलग करके डील करना शुरु कर दिया है। वर्कलोड में अत्यन्त वृद्धि तथा सहुलियतों में भारी कटौती की है। यूनिफार्म पहनना कम्पलसरी कर दिया है। मजदूरों में से बारी-बारी से मानिटर नियुक्त कर स्वयं मजदूरों द्वारा एक-दूसरे पर नजर रखवाना आरम्भ कर दिया है। डिसिप्लिनरी एक्शन के डर और इनसैंटिव के लालच में सहकर्मियों की खुफिया निगाहें और जोड़ी जा रही हैं।

मजदूरों के प्रतिरोध को तोड़ने के लिये इन मैनेजमेंटों ने अलग-अलग तरीके अपनाये। टाइटन फैक्ट्री में तीन महीने की तालाबन्दी कर मैनेजमेंट ने मजदूरों पर अपनी शर्तें थोपी। बिचौलियों ने अपने पर मंडराते खतरे को टालने के लिये विपरो में मजदूरों को उकसा कर रस्मी हड़ताल की। उस हड़ताल को तीन महीने खींच कर विपरो मैनेजमेंट ने बिचौलियों को तो ठिकाने लगाया ही, उसने इस प्रकार मजदूरों को कमजोर कर उन्हें भी झुकने को मजबूर किया।

1989 में फरीदाबाद में आयशर ट्रैक्टर्स में जहाँ 1100 मजदूर महीने में 1500 ट्रैक्टर बनाते थे वहाँ 450 मजदूरों से वही प्रोडक्शन करवाना शुरु कर आयशर मैनेजमेंट ने मैनेजमेंटों को सलाह देने वाली आयशर कनसलटैन्सी सर्विस को ख्याति प्रदान की। विपरो फ्ल्युइड पावर मैनेजमेंट और मजदूरों के बीच टकराव के वक्त आयशर कनसलटैन्सी विपरो मैनेजमेंट की सलाहकार थी।

इस नई स्टाइल के लिये व्यापक स्वीकृति हासिल करने के वास्ते मैनेजमेंट गुरुओं ने जोर-शोर से एडवरटाइजिंग अभियान शुरु कर दिया है। स्कूलों में बच्चों जैसा फैक्ट्रियों में मजदूरों के साथ व्यवहार की मैनेजमेंटों की नीति-प्रवृति को स्थापित करने में रस्मी व फर्जी संघर्ष सहायक ही होते हैं और हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहने का मतलब अपने जीवन को बदतर बनाने में सहभागी बनने जैसा है। क्या करें? आपस में विचार-विमर्श करना जरूरी हो गया है।

डाँट-फटकार, मार-पीट, बहलाना-फुसलाना काफी समय से बच्चों की परवरिश का आम सिद्धान्त और सामान्य जनरल व्यवहार रहा है। डर और लालच को बच्चों के विकास की बेहतरीन धुरियाँ पेश किया गया है। घर-परिवार के दायरों में लाड़-प्यार का पहलू इनमें जटिलता लाता है। संस्थागत रूप धारण कर डर और लालच की धुरियाँ स्कूलों में शुद्ध तौर पर सामने आती हैं।

मनमाफिक साँचे में ढालने के लिये बच्चों के प्रतिरोध को कमजोर करने के वास्ते स्कूलों में हर बच्चे को अलग-अलग से डील किया जाता है। डिसिप्लिन का विस्तृत मकड़जाल बच्चों की रचनात्मकता को खत्म कर उन्हें एकरूप करने को सतत क्रियाशील रहता है। अनुशासन की गिरफ्त बनाये रखने के लिये प्रत्येक बच्चे को यूनिफार्म और प्रोग्रेस रिपोर्ट से बाँध दिया जाता है। मानिटर पद्धति के जरिये स्वयं बच्चों द्वारा एक-दूसरे पर निगाह रखवा कर स्कूल मैनेजमेंटें बच्चों पर अपने कन्ट्रोल को मजबूत करती हैं।

स्कूलों में बच्चों में जब-जब सामुहिक विरोध के स्वर उभरते हैं तब उनके परिवारों के हस्तक्षेप से उनके मुँह बन्द कर दिये जाते हैं।

नासमझी और अबोधता के नाम पर बच्चों के प्रति ऐसे व्यवहारों को जायज ठहराया जाता है।

"सुधारघरों" में हत्यायें

पुलिस और जेल की आकर्षक तस्वीर पेश करने के लिये तिहाड़ जेल की इन्चार्ज पुलिस अफसर को हाल ही में एक अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया है।

जिन जेल सुधारों का व्यापक प्रचार किया गया है ऐसे हर सुधार ने किसी न किसी कैदी की जान ली है। तिहाड़ जेल में हर ग्यारह दिन में एक बन्दी की हत्या कर दी जाती है। 1988 से अब तक इस जेल में 230 से ज्यादा कैदी कत्ल किये जा चुके हैं। सरकारी नियमों के अनुसार तिहाड़ जेल में 2,500 लोगों को बन्द करने की जगह है। इस समय इस जेल के सींखचों में 8,000 लोग कैद हैं।

सरकारी नियमों के अनुसार जेल में बन्द लोगों को दिन में तीन बार भोजन दिया जाना चाहिये। तिहाड़ जेल में दो टाइम ही खुराक दी जाती है।

(जानकारी 29 अक्टूबर के पायनियर अखबार में पी यू डी आर की रिपोर्ट से ली है।)

कही-सुनी-देखी

★ **6 अक्टूबर** को दिन की ड्यूटी में साथ काम करते एक मजदूर ने बताया, "जवाहर कालोनी में मेरे मकान के पास के कमरों से पुलिस आज सुबह दो मजदूरों को पकड़ कर ले गई। पुलिस वाले घरों में घुस कर कह रहे थे, 'छडे हो तो चलो बैठो ट्रक में।"

★ दिल्ली में एक **बुजुर्ग महिला** ने बताया, "19 अक्टूबर को कनाट प्लेस में हनुमान मन्दिर के पास शाम को एक मोटरसाइकिल ने राह चलते कैन्टीन वरकर रामबचन को टक्कर मारी। वह गिर गया, सिर में चोट लगी और खून निकला। मोटरसाइकिल सवार ने रामबचन को 300 रुपये दिये। तभी वहाँ एक पुलिसवाला पहुँचा। उसने रामबचन के थप्पड़ मारा और उसकी जेब में से 100 रुपये निकाल लिये। आते-जाते लोग देखते रहे पर कोई कुछ नहीं बोला। मोटरसाइकिल वाला रामबचन को अस्पताल ले गया जहाँ फस्ट एड के बाद डॉक्टर ने उसे घर जाने को कहा तब उसने आ कर मुझे यह सब बताया।"

★ **झालानी टूल्स** के एक फोरमैन ने कहा, "अखबार में यह बात जरूर देना कि झालानी टूल्स मैनेजमेंट पहली से ले कर तीस तक पूरे महीने तनखा बाँटती रहती है फिर भी स्टाफ का तीन-चार महीनों का वेतन हर समय बकाया रहता है।"

★ 19 अक्टूबर को दिल्ली बारडर के पास मथुरा रोड़ पर स्थित **क्लच आटो** फैक्ट्री के गेट पर काले झन्डे लगे होने का कारण एक गार्ड से पूछा तो उसने कहा, "यह दीवाली नजदीक आने की निशानी है।"

चमत्कारी बूटी

तीव्र व अधिकाधिक बोझिल होता काम, कदम-कदम पर लगती ठोकरों और पल-पल अपमान के घूँट पीने को मजबूर अधिकाधिक आबादी हताशा, गहन उदासी के गर्त में जा रही है। अमरीका और यूरोप में इस सामाजिक बीमारी के इलाज के लिये गोली-दर-गोली का आविष्कार हुआ है।

न सिर्फ यह कि चिकित्सा विज्ञान के चमत्कारों का असर गोलियों के नशे के दौरान तक ही रहता है बल्कि तथ्य यह भी रहा है कि गोलियों का सेवन नई तकलीफें पैदा करता है जिसके कारण एक के बाद दूसरी गोली पर पाबन्दी लगाई गई है। कुछ समय से प्रोजैक नाम की एक चमत्कारी गोली गहन उदासी दूर करने के लिये डॉक्टर मरीजों को थोक में देते रहे हैं। प्रोजैक के कोई हानिकारक प्रभाव नहीं होने की शोहरत रही है। लेकिन इधर यह तथ्य उभर कर आया है कि प्रोजैक का सेवन आत्महत्या अथवा हिंसा की ओर धकेलता है।

क्या सामाजिक बीमारी की डॉक्टरी चिकित्सा का इससे अलग नतीजा हो सकता है?

इस अखबार के काम में हाथ बँटाने के लिये, अखबार के विस्तार के लिये आप इनमें से कोई एक या कई अथवा सब काम कर सकते हैं :

– अखबार की सामग्री पर राय देना।

– अखबार में छपने के लिये सामग्री जुटाना।

– अखबार बाँटने में हिस्सा लेना।

– अखबार पर खर्च के लिये रुपये-पैसे देना।

जरा सम्भल के!

मैनेजमेंट का प्रकाशन 'एस्कोर्ट्स न्यूज' (अप्रेल-जून 1994 अंक) : ई टी एल (फोर्ड) में रिकार्ड प्रोफिट, शेयर होल्डरों की जेबों में रिकार्ड 65 परसैन्ट डिविडेन्ड। गोइट्ज की बिक्री में 79% वृद्धि, शेयर होल्डरों की पाकेटों में 30% डिविडेन्ड। एस्कोर्ट्स फाइनैनशियल सर्विसेज के मुनाफे में 90 परसैन्ट का इजाफा।

एस्कोर्ट्स के बही-खातों से परिचित व्यक्ति : यामाहा बहुत अच्छी बिक रही है, एम एस डी (राजदूत) की अच्छी सेल है, फोर्ड व एस्कोर्ट्स ट्रैक्टर ठीक चल रहे हैं... इस साल की प्रथम छमाही की रिपोर्ट के मुताबिक ऑल एस्कोर्ट्स की बैलेन्स शीट बहुत अच्छी है। कुल मिला कर इस समय एस्कोर्ट्स मैनेजमेंन्ट की माली हालत बढिया है।

तो फिर 24 से 29 अक्टूबर तक क्या बात थी? कुछ नहीं, ड्रामा था! किसलिये? इश्यु तो कोई नहीं थी।

आपकी बात समझ में नहीं आई, 24 से 29 अक्टूबर तक 12 हजार परमानेन्ट, 4-5 हजार कैजुअल व ठेकेदारों के वरकरों और तीन हजार स्टाफ वाले फरीदाबाद में 12 प्लान्टों में चक्का जाम करके एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट ने 35-40 करोड़ रुपये का प्रोडक्शन किसलिये नहीं लिया? मामला सीरियस है, पता करना चाहिये।

एस्कोर्ट्स के आम मजदूर हों चाहे स्टाफ के लोग या फिर मामले में दिलचस्पी लेने वाले अन्य लोग, थोड़ा कुरेदते ही असमंजस में पड़ जाते हैं क्योंकि जिसे वे नाटकबाजी मान कर नजरअन्दाज कर रहे हैं और नुकसान के लिये लीडर को गाली दे रहे हैं वह असल में एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट द्वारा पकाई जा रही किसी खिचड़ी की बदबू का एक झोंका अधिक लगता है।

दस-बारह साल के घटनाक्रम पर निगाह डालिये और देखिये कि एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट किस प्रकार अपनी पालिसियाँ लागू कर रही है। तब 24-29 अक्टूबर के घटनाक्रम पर विचार कीजिये। याद रखिये कि नेता-वेता सारतः मैनेजमेंटों की कठपुतलियों से अधिक कुछ नहीं हैं।

संक्षेप में : सब सामान्य। अचानक शनिवार, 22 अक्टूबर को जनरल बाडी मीटिंग का नोटिस। मीटिंग में मैनेजमेंट के अड़ियलपन का रोना और संघर्ष की पीपनी। सोमवार को 12 बजे आमरण अनशन आरम्भ और 2 बजे पुलिस द्वारा उठाने पर नोयडा नर्सिंग होम में भर्ती। 24 को ही 2 बजे से फरीदाबाद में 12 प्लान्टों में टूल डाउन जो कि 29 को 2 बजे५०० लोगों को समझौते की सूचना दे कर खत्म करने को कहा गया।

मैनेजमेंट ने हाल की तीन साला एग्रीमेंट में एक साल खा कर प्रत्येक एस्कोर्ट्स मजदूर को 60-70 हजार रुपये का नुकसान पहुँचाया। वरकर इस पर चुप्पी साधे रहे। मैनेजमेंट को इसमें और छूट नजर आनी ही थी। 22 के रोने-पीटने और 24 के टूल डाउन पर मजदूरों ने कोई सवाल-जवाब नहीं किये। मैनेजमेंट को आगे बढने का सिगनल मिला। ऐसे में 29 को 1500 रुपये के नुकसान पर लीडरों को गाली देने से क्या होगा? जिस तीन साला एग्रीमेंट को वरकरों ने माना है उसमें क्या है यह छह महीने बाद अब भी एस्कोर्ट्स मजदूरों को पता नहीं है। अब मैनेजमेंट की जो शर्तें मानी गई हैं उनके बारे में भी मजदूर अनभिज्ञ हैं।

लक्षण बता रहे हैं कि एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट कोई कड़वी खिचड़ी पका रही है।

टायर का गुडईयर
मजदूरों का बैडईयर

रिटायर हो रहे मजदूरों की जगह नई भर्ती नहीं करने, वालेन्टरी रिटायरमेन्ट स्कीम और छोटी-छोटी बात पर चार्जशीट-सस्पैन्ड कर इस्तीफे देने को मजबूर कर गुडईयर मैनेजमेंट ने मजदूरों की संख्या में भारी कटौती का सिलसिला जारी किया हुआ है। मैनेजमेंट की यह पालिसी गुडईयर मजदूरों के लिये वर्क लोड और एक्सीडेन्टों में वृद्धि के तोहफे लिये है।

एक-डेढ साल पहले गुडईयर में मेन्टेनैन्स में जहाँ 200 वरकर थे वहाँ अब 125 ही हैं। प्रति डिपार्टमेंट दो के स्थान पर आज एक मजदूर को मेन्टेनैन्स का काम करना पड़ रहा है। नई-नई मशीनों का आना जारी है, मेन्टेनैन्स वरकरों के काम में वृद्धि जारी है और वरकर कम करने का सिलसिला भी जारी है। हाल ही में चार मेन्टेनैन्स वरकरों से इस्तीफा लिखवा कर गुडईयर मैनेजमेन्ट ने दो और को सस्पैन्ड कर दिया है।

वर्क लोड में वृद्धि और एक्सीडैन्टों के बढने में चोली-दामन का रिश्ता है। अन्य गुडईयर मजदूरों की ही तरह बढते और अधिक खतरनाक होते एक्सीडैन्टों की चपेट में मेन्टेनैन्स वरकर भी आ रहे हैं। फैक्ट्री में एक्सीडैन्ट में कमर तुड़ा कर चारपाई पकड़े एक मेन्टेनैन्स वरकर को पाँच महीने हो गये हैं और दूसरा चार महीनों से अपने तहस-नहस पैर को ठीक करने में लगा है। और, एक्सीडैन्टों को हुये तीन महीनों के बाद से गुडईयर मैनेजमेंट इन वरकरों को यह कह कर वेतन नहीं दे रही कि एग्रीमेन्ट में बीमार-घायल को तीन महीने तक वेतन देने की ही बात है। (गुडईयर के परमानेन्ट वरकर ई एस आई के दायरे में नहीं आते।)

ई एस आई : कुछ तथ्य

फरीदाबाद में एक लाख 28 हजार मजदूरों की ई एस आई कटती है। यहाँ 16 डिस्पैंसरियाँ हैं। ई एस आई नियमानुसार इन डिस्पैंसरियों में एक हजार हैल्थ वरकर होने चाहियें पर हैं इनके आधे भी नहीं। 144 डॉक्टरों की जगह मात्र 60 डॉक्टर हैं।

तीन नम्बर ई एस आई अस्पताल में 200 बिस्तर थे। 8 सैक्टर में बने नये ई एस आई अस्पताल में 50 बिस्तर हैं। नये अस्पताल में जगह काफी होने के मद्देनजर पुराने से 100 बिस्तर नये में ट्रान्सफर कर दिये गये पर वे रास्ते में ही कहीं खो गये। इस समय तीन नम्बर में 100 बिस्तर और 8 सैक्टर में 50 बिस्तर, यानि कुल 150 बिस्तर हैं। ई एस आई नियमानुसार फरीदाबाद में ई एस आई अस्पताल में 512 बिस्तर होने चाहियें।

दिल्ली में ई एस आई डिस्पैंसरियों में अलग-अलग कर्मचारियों वाली दो शिफ्ट हैं। दिल्ली में हर डिस्पैंसरी में एम्बुलैन्स है जबकि फरीदाबाद में एक भी डिस्पैंसरी में एम्बुलैन्स नहीं है। दिल्ली में ई एस आई से मरीजों को जिन अस्पतालों को रेफर किया जाता है वे अस्पताल अपने बिल सीधे ई एस आई को भेजते हैं। फरीदाबाद में इस प्रकार रेफर किये मरीजों को पहले खुद पेमेन्ट करनी पड़ती है और फिर ई एस आई से क्लेम करने में महीनों चक्कर काटने पड़ते हैं।

सामुहिक कदम

★ **बत्रा एसोसियेट्स,** मथुरा रोड़ पर स्थित इस फैक्ट्री के मजदूर हर साल दीवाली पर बीस परसैन्ट बोनस लेते रहे हैं। इस साल मैनेजमेंट ने दशहरे से पहले ही चुपचाप 11.33% बोनस बाँटना शुरु कर दिया। मैनेजमेंट ने 7-8 लोगों को बोनस दे भी दिया था कि बत्रा एसोसियेट्स के मजदूरों ने एक स्वर में इसका विरोध किया। दस अक्टूबर को फैक्ट्री में काम करते 150 मजदूरों ने कम बोनस के खिलाफ टूल डाउन किया। 11 को मैनेजमेंट ने साइन करके फैक्ट्री के अन्दर जाने देने की शर्त रखी। सब मजदूरों ने इनकार कर दिया और फैक्ट्री गेट के पास इक्ट्ठे हो गये। लेकिन इसके बाद यह मजदूर किसी बिचौलिये के चक्कर में आ गये और यह अपनी ताकत बढाने के लिये कोई कदम उठाते नहीं दिखे। इससे 19 अक्टूबर को ही बत्रा एसोसियेट्स फैक्ट्री के मजदूरों में कमजोरी जाहिर होने लगी थी।

★ **झालानी टूल्स** के तीनों प्लान्टों में स्टाफ को बिना वेतन काम करते चौथा महीना शुरु हो गया तब 6 अक्टूबर को तीनों प्लान्टों के स्टाफ ने अपने-अपने प्लान्ट में मैनेजर को घेरा। 7 अक्टूबर को भी तीनों प्लान्टों का स्टाफ अपने-अपने प्लान्ट में एक जगह इक्ट्ठा हो कर बैठा और काम बन्द रखा। मैनेजमेंट ने जुलाई का वेतन दशहरे से पहले देने का आश्वासन दे कर काम शुरु करवाया।

I और III प्लान्ट में मैनेजमेंट ने स्टाफ को जुलाई का वेतन दे दिया पर II प्लान्ट के स्टाफ को नहीं दिया। दशहरे के बाद 16 अक्टूबर को जब काम आरम्भ हुआ तब II प्लान में स्टाफ ने टूल डाउन हड़ताल शुरु कर दी। प्लान्ट मैनेजर, कमर्शियल मैनेजर और परसनल अफसर को छोड़ कर पूरा स्टाफ प्लान्ट में एक जगह इक्ट्ठा हो कर बैठा।

17 अक्टूबर को भी II प्लान्ट में स्टाफ ने हड़ताल जारी रखी। सब लोग एक जगह बैठे और चाय-पानी भी सबने इक्ट्ठा किया। I व III के स्टाफ ने समर्थन का आश्वासन दिया। इक्के-दुक्के को छोड़ कर II प्लान्ट के सब मजदूरों ने स्टाफ का समर्थन किया। 18 को जुलाई का वेतन दे दिया गया पर फिर भी स्टाफ ने हड़ताल जारी रखी। स्टाफ ने वेतन की तारीखें निर्धारित करने और दो साल के बकाया एल टी ए की माँग की। 19 अक्टूबर को भी दिन-भर II प्लान्ट में स्टाफ की हड़ताल जारी रही। 19 को शाम को मैनेजमेंट द्वारा अगस्त का वेतन और बोनस दीवाली से पहले देने के आश्वासन के बाद स्टाफ ने सैकेन्ड शिफ्ट में काम शुरु किया।

19 नवम्बर को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 नवम्बर को रात 8 बजे इस अखबार के नवम्बर अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी – 548 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।